



वर्ष-28 अंक : 211 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टनम, तिरुपति से प्रकाशित) आश्विन शु.5 2080 गुरुवार, 19 अक्टूबर-2023

मनी-लॉन्डिंग कानून

रिव्यू पिटीशन पर 22 नवंबर को सुनवाई

एससी ने कहा- हम फैसले पर नहीं, कुछ बिंदुओं पर विचार कर रहे हैं

नई दिल्ली, 18 अक्टूबर (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट में प्रियंकशन अंक मनी लॉन्डिंग एक्ट (पीएमएलए) को लेकर दाखिल रिव्यू पिटीशन पर 18 अक्टूबर को सुनवाई हुई। जस्टिस एसके कोल, जस्टिस संजीव खाना और जस्टिस बेला एस क्रियोदी की बेंच मामले को सुना। बेंच ने कहा कि हम फैसले पर नहीं, बल्कि उसके कुछ प्वाइंस पर विचार कर रहे हैं। मामले की सुनवाई के लिए एक दिन तय करेंगे, हर पक्ष को दर्लिल देने के लिए हाफ सेशन मिलेगा। आगली सुनवाई 22 नवंबर 2022 में मामले पर सुनवाई करते हुए कानून को समीक्षा करेंगे। इसके बाद याचिकाकर्ताओं ने रिव्यू पिटीशन दाखिल कर कर्ट से मामले पर दोबारा विचार करने की अपील की थी।



25 अगस्त 2022 को सुप्रीम कोर्ट ने रिव्यू पिटीशन पर सुनवाई की। अदालत ने कहा- हम काला धन और मनी लॉन्डिंग रोकने के समर्थन में हैं, लेकिन हमें लाता है कि कुछ मुद्दों पर फिर से विचार करना चाहिए। कोर्ट ने मामले में केंद्र सरकार को नाट्य जारी किया था। कोर्ट का माना है कि कानून के दो नियम, इंडी की तरफ से दर्ज एक आर्डिआर की रिपोर्ट आरोपी को न देने के प्रवाधन और खुद को

विचार-विमर्श करने के बाद फैसला दिया था। याचिकाकर्ता को लगता है कि धारा 50 की गलत व्याप्ति की गई है। कल कोई आक्रमण करेगा कि वह सेम सेक्स मीज पर 5 जोड़ों की बेंच की ओर से दिए गए फैसले से बदल नहीं है।

याचिकाकर्ता के बेंच कपिल सिंहल: मोरे तौर पर 5 मुद्दे हैं। अदालत का बहाना है कि पीएमएलए कोई दंडात्मक कानून नहीं है।

वह मेरी फली समस्या है। मुझे मनी लॉन्डिंग के लिए दोषी ठहराया जा सकता है और सजा सुनाई जा सकती है। क्या वह काला धन कोई दंडात्मक कानून नहीं है? कोर्ट कह रही है कि वह नियमाकर कानून है।

सिंहल: एक और मुद्दा है, मान लेंजी के लिए क्राइम एक जगह होता है। जैसे भी लॉन्डिंग के तहत हुई गिरफ्तारी में जमानत मिलनी चाहिए या नहीं। बल्कि कानून से जुड़े कुछ फलुर्हों पर विचार किया जाना है।

सॉलिसिट जनरल: कोर्ट में बहुत सिल्वर बोल रहे थे एसजी एसवी

अस्पताल हमले में मौतों को पीएम मोदी ने बताया गंभीर मामला

नई दिल्ली, 18 अक्टूबर (एजेंसियां)। माद्रास उच्च न्यायालय की मटौरे पीटी ने 22 अक्टूबर को अमीर, रामनाथपाल और शिवगंगा जिले में अराएसएस पर सेम सचलन (रूट मार्च) की अनुमति देने से इनकार किया। इसमें पहले सामवार माद्रास उच्च न्यायालय आदेश दिया था कि 22 और 29 अक्टूबर को तामिलनाडु में 35 स्थानों पर प्रस्तावित आराएसएस के रूट मार्च के लिए पुलिस अनुमति दी जाए। न्यायागौरी जी, जयवंदन ने कार्यक्रम की अनुमति मानव वाली याचिकाओं और आदेश पारित किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि पुलिस को कम तीन से पांच दिन पहले जारी किया जाना चाहिए। अनुमति देने के लिए पुलिस हुए कि मार्च के मान नहीं होना चाहिए, अनुमति देने के लिए पुलिस द्वारा उठाई गई सभी आपत्तियों को खारिज किया। हालांकि, उन्होंने उचित प्रतिबंध लगाने की अनुमति दी। याचिकाकर्ताओं की ओर से पेश विवर बकील जी, कार्तिकेयन और वकील रबू मनोहर की दलीलें सुनने के बाद आदेश पारित किए गए।



पीएम मोदी ने लिया, "गाजा के अल-अहली अस्पताल में मौतों से गहरा दुख पहचा है। पीड़ितों के परिवारों के साथ मेरी हार्दिक संवेदनाएं और धारालों के जल्दी ठीक होने की प्रार्थनाएं।" पीएम ने इनी द्वारा मौतों की बतायी तथा जारी करने के लिए जिम्मेदारी तय कर लिया है।

पीएम मोदी ने लिया, "गाजा के अल-अहली अस्पताल में मौतों से गहरा दुख पहचा है। पीड़ितों के परिवारों के साथ मेरी हार्दिक संवेदनाएं और धारालों के जल्दी ठीक होने की प्रार्थनाएं।" पीएम ने इनी द्वारा मौतों की बतायी तथा जारी करने के लिए जिम्मेदारी तय कर लिया है।

पीएम मोदी ने लिया, "गाजा के अल-अहली अस्पताल में मौतों से गहरा दुख पहचा है। पीड़ितों के परिवारों के साथ मेरी हार्दिक संवेदनाएं और धारालों के जल्दी ठीक होने की प्रार्थनाएं।" पीएम ने इनी द्वारा मौतों की बतायी तथा जारी करने के लिए जिम्मेदारी तय कर लिया है।

पीएम मोदी ने लिया, "गाजा के अल-अहली अस्पताल में मौतों से गहरा दुख पहचा है। पीड़ितों के परिवारों के साथ मेरी हार्दिक संवेदनाएं और धारालों के जल्दी ठीक होने की प्रार्थनाएं।" पीएम ने इनी द्वारा मौतों की बतायी तथा जारी करने के लिए जिम्मेदारी तय कर लिया है।

पीएम मोदी ने लिया, "गाजा के अल-अहली अस्पताल में मौतों से गहरा दुख पहचा है। पीड़ितों के परिवारों के साथ मेरी हार्दिक संवेदनाएं और धारालों के जल्दी ठीक होने की प्रार्थनाएं।" पीएम ने इनी द्वारा मौतों की बतायी तथा जारी करने के लिए जिम्मेदारी तय कर लिया है।

पीएम मोदी ने लिया, "गाजा के अल-अहली अस्पताल में मौतों से गहरा दुख पहचा है। पीड़ितों के परिवारों के साथ मेरी हार्दिक संवेदनाएं और धारालों के जल्दी ठीक होने की प्रार्थनाएं।" पीएम ने इनी द्वारा मौतों की बतायी तथा जारी करने के लिए जिम्मेदारी तय कर लिया है।

पीएम मोदी ने लिया, "गाजा के अल-अहली अस्पताल में मौतों से गहरा दुख पहचा है। पीड़ितों के परिवारों के साथ मेरी हार्दिक संवेदनाएं और धारालों के जल्दी ठीक होने की प्रार्थनाएं।" पीएम ने इनी द्वारा मौतों की बतायी तथा जारी करने के लिए जिम्मेदारी तय कर लिया है।

पीएम मोदी ने लिया, "गाजा के अल-अहली अस्पताल में मौतों से गहरा दुख पहचा है। पीड़ितों के परिवारों के साथ मेरी हार्दिक संवेदनाएं और धारालों के जल्दी ठीक होने की प्रार्थनाएं।" पीएम ने इनी द्वारा मौतों की बतायी तथा जारी करने के लिए जिम्मेदारी तय कर लिया है।

पीएम मोदी ने लिया, "गाजा के अल-अहली अस्पताल में मौतों से गहरा दुख पहचा है। पीड़ितों के परिवारों के साथ मेरी हार्दिक संवेदनाएं और धारालों के जल्दी ठीक होने की प्रार्थनाएं।" पीएम ने इनी द्वारा मौतों की बतायी तथा जारी करने के लिए जिम्मेदारी तय कर लिया है।

पीएम मोदी ने लिया, "गाजा के अल-अहली अस्पताल में मौतों से गहरा दुख पहचा है। पीड़ितों के परिवारों के साथ मेरी हार्दिक संवेदनाएं और धारालों के जल्दी ठीक होने की प्रार्थनाएं।" पीएम ने इनी द्वारा मौतों की बतायी तथा जारी करने के लिए जिम्मेदारी तय कर लिया है।

पीएम मोदी ने लिया, "गाजा के अल-अहली अस्पताल में मौतों से गहरा दुख पहचा है। पीड़ितों के परिवारों के साथ मेरी हार्दिक संवेदनाएं और धारालों के जल्दी ठीक होने की प्रार्थनाएं।" पीएम ने इनी द्वारा मौतों की बतायी तथा जारी करने के लिए जिम्मेदारी तय कर लिया है।

पीएम मोदी ने लिया, "गाजा के अल-अहली अस्पताल में मौतों से गहरा दुख पहचा है। पीड़ितों के परिवारों के साथ मेरी हार्दिक संवेदनाएं और धारालों के जल्दी ठीक होने की प्रार्थनाएं।" पीएम ने इनी द्वारा मौतों की बतायी तथा जारी करने के लिए जिम्मेदारी तय कर लिया है।

पीएम मोदी ने लिया, "गाजा के अल-अहली अस्पताल में मौतों से गहरा दुख पहचा है। पीड़ितों के परिवारों के साथ मेरी हार्दिक संवेदनाएं और धारालों के जल्दी ठीक होने की प्रार्थनाएं।" पीएम ने इनी द्वारा मौतों की बतायी तथा जारी करने के लिए जिम्मेदारी तय कर लिया है।

पीएम मोदी ने लिया, "गाजा के अल-अहली अस्पताल में मौतों से गहरा दुख पहचा है। पीड़ितों के परिवारों के साथ मेरी हार्दिक संवेदनाएं और धारालों के जल्दी ठीक होने की प्रार्थनाएं।" पीएम ने इनी द्वारा मौतों की बतायी तथा जारी करने के लिए जिम्मेदारी तय कर लिया है।

पीएम मोदी ने लिया, "गाजा के अल-अहली अस्पताल में मौतों से गहरा दुख पहचा है। पीड़ितों के परिवारों के साथ मेरी हार्दिक संवेदनाएं और धारालों के जल्दी ठीक होने की प्रार्थनाएं।" पीएम ने इनी द्वारा मौतों की बतायी तथा जारी करने के लिए जिम्मेदारी तय कर लिया है।

पीएम मोदी ने लिया, "गाजा के अल-अहली अस्पताल में मौतों से गहरा दुख पहचा है। पीड़ितों के परिवारों के साथ मेरी हार्दिक संवेदनाएं और धारालों के जल्दी ठीक होने की प्रार्थनाएं।" पीएम ने इनी द्वारा मौतों की बतायी तथा जारी करने के लिए जिम्मेदारी तय कर लिया है।

पीएम मोदी ने लिया, "गाजा के अल-अहली अस्पताल में मौतों से गहरा दुख पहचा है। पीड़ितों के परिवारों के साथ मेरी हार्दिक संवेदनाएं और धारालों के जल्दी ठीक होने की प्रार्थनाएं।" पीएम ने इनी द्वारा मौतों की बतायी तथा जारी करने के लिए जिम्मेदारी तय कर लिया है।

पीएम मोदी ने लिया, "गाजा के अल-अहली अस्पताल में मौतों से गहरा दुख पहचा है। पीड़ितों के परिवारों के साथ मेरी हार्दिक संवेदनाएं और धारालों के जल्दी ठीक होने की प्रार्थनाएं

अब गेंद संसद के पाले में

आखिरकार, समलैंगिकों की आशाओं पर पानी तब फिर गया जब सुप्रीम कोर्ट ने उनकी शादी को कानूनी मान्यता देने से इनकार कर दिया। यही नहीं सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि ऐसे कपल्स को बच्चों को गोद लेने का अधिकार भी नहीं मिलेगा। इसी साल अप्रैल और मई में सुनवाई पूरी करने के करीब पांच महीने बाद मंगलवार को आया सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला एल-जीबीटीक्यू विरादरी और उसके समर्थकों के लिए निराशाजनक ही कहा जाएगा। खासकर तब जब 2018 में समलैंगिक रिश्तों को प्रतिबंधित करने वाली धाराएं सुप्रीम कोर्ट की ओर से खारिज किए जाने के पांच साल बाद उम्मीद की जा रही थी कि शीर्ष अदालत के दखल से समाज इस दिशा में एक कदम और आगे बढ़ेगा। लेकिन ताजा आदेश से वह संभव नहीं हो सका। फैसले को समझने से यह भी साफ हो जाता है कि सुप्रीम कोर्ट समलैंगिक रिश्तों को किसी भी मायने में कमतर समझे जाने के पक्ष में नहीं है। फैसले में अलग-अलग तरह से यह बात रेखांकित की गई है कि ऐसे रिश्ते बनाने वालों के साथ किसी भी तरह का भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए। यही नहीं सभी सुविधाओं तक उनकी निर्बाध पहुंच सुनिश्चित करने के प्रयास भी किए जाने की जरूरत है। सुप्रीम कर्ट के फैसले का मुख्य आधार यह रहा कि इन शादियों को कानूनी मान्यता देने का सवाल विधायिका के अधिकार क्षेत्र में आता है। इस पर वही कोई पहल कर सकता है। संवैधानिक लिहाज से यह आधार वाजिब है और अपनी सीमा का सम्मान कर सुप्रीम कोर्ट ने सही निर्णय लिया है। ऐसे में अहम सवाल लाजमी है क्या संसद इस दिशा में अपनी तरफ से पहल करके ऐसा कोई कानून बनाएगी? देखा जाए तो इसमें कोई बाधा नहीं होनी चाहिए। जब बौतौर नागरिक दो वयस्क व्यक्ति अपनी इच्छा से संबंध बनाने और साथ रहने के हकदार हैं तो उनके उस संबंध को कानूनी मान्यता देने में आखिर हर्ज ही क्या है? इस दिशा में मौजूदा नियम-कानूनों को जो बाधाएं हैं, उन्हें दूर किए जाने की ज़रूरत है।

का जरूरत ह। नाश्चत हा यह काम संसद कर सकता ह आर उस इस पर कदम आगे बढ़ाना भी चाहिए। लेकिन जो तथ्य इस बारे में ज्यादा आशान्वित नहीं होने दे रहा वह है मौजूदा सरकार का इस सवाल पर दिखा रुख। सरकार इस मामले में कोर्ट में पहले ही दोहरा चुकी है कि समलैंगिक शादियों को कानूनी मान्यता नहीं दी जानी चाहिए क्योंकि इससे कई तरह की कानूनी पैचदगियां पैदा होंगी। यही नहीं, सरकार का यह भी तर्क है कि यह एक इलीटिस्ट और शहरी अवधारणा है और इस तरह का संबंध रखने वाले लोगों की संख्या देश में बहुत कम है। बहरहाल, सीजेआई ने अपने फैसले में साफ कहा है कि इसे सिर्फ इस आधार पर शहरों तक सीमित अवधारणा नहीं कहा जा सकता कि ऐसे संबंधों के ज्यादातर उदाहरण शहरों में ही देखने को मिलते हैं। इसका कारण यह भी हो सकता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में समाज के दबाव में लोग ऐसे संबंध खुलकर स्वीकार नहीं कर पाते हों। बहरहाल, इससे इतना तो स्पष्ट है कि संसद के मौजूदा बहुमत से इस दिशा में किसी तरह के पहल की उम्मीद नहीं की जा सकती। इसलिए गेंद संसद के पाले में होने के बावजूद इस पर असमंजस बरकरार रहने की उम्मीद से इनकार नहीं किया जा सकता।

भारतीय तेज मणिषक विदेशों में सेवारत

संजीव ठाकुर

विगत दो दशकों में प्रतिभा पलायन भारत के लिए एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा है शिक्षा के क्षेत्र में बड़े शिक्षा संस्थानों में भारी-भरकम खर्च के बाद शिक्षित युवक विदेशों में अपनी सेवाएं प्रदान करने को सदैव तत्पर रहते हैं इसका बड़ा कारण विदेशी मुद्रा की कमाई और विदेशी चकाचौंध के तरफ आकर्षण ही होता है। इससे भारत के आर्थिक तंत्र पर बड़ा भार प्रत्यारोपित होता है। इन्हाँ खर्च कर के पढ़ाई करने के बाद भारतीय युवा मस्तिष्क भारत के विकास में योगदान न दें तो देश के लिए विडंबना की भाँति है। भारत के इतिहास पर नजर डालें, तो नालंदा, तक्षशिला, शांति निकेतन, और पाटलिपुत्र जैसे बड़े शिक्षा के केंद्र रहे हैं। सदैव अलग-अलग देशों से सिद्ध शिक्षा प्राप्त करने भारत आते रहे हैं। अब ऐसा क्या हो गया है कि भारत से तकनीकी, चिकित्सकीय और संचार माध्यमों, मैनेजमेंट की पढ़ाई के लिए भारत से लगभग दो से ढाई लाख छात्र विदेश में पढ़ने के लिए जाने लगे हैं। वही भारत सरकार का सदैव प्रयास रहा है कि विदेशी छात्र हिंदुस्तान में पढ़ाई के लिए देश में आए और और हिंदुस्तानी डिग्री लेकर अपने देश में लौटे। इस तरह भारत सरकार द्वारा भारत को एक बड़ा शिक्षा केंद्र के रूप में स्थापित करना चाहता है। और किसके लिए एक अभियान फेलोशिप कार्यक्रम चलाया गया है। इसके अलावा सरकार द्वारा एक प्रोजेक्ट डेस्टिनेशन इंडिया भी शुरू सस्थान में शामिल ह। भारत में शिक्षा प्राप्त करना कम खर्च में संभव है, पर भारत के छात्र अ मेरि का, औस्ट्रेलिया, कनाडा, सिंगापुर में पढ़ना चाहते हैं जहाँ पढ़ने का खर्च डॉलर में यहाँ से चार गुना पढ़ता है। जबकि भारत में एए छात्रों का पढ़ाई तथा खाने-पीने रहने का खर्च लगभग एक चौथाई होता है, फिर भी भारत के अभियाक अपने बच्चों को विदेश भेजने में बरीयता देते हैं। भारत द्वारा लगातार प्रयास किया जा रहा है कि भारत के विश्वविद्यालयों की शिक्षा की गुणवत्ता विदेशी स्तर पर हो, पर इसमें काफी समय लगने की गुंजाइश भी है। यह भी संभव होगा कि विदेशी विश्वविद्यालयों की शाखाएं भारत में खोल दी जाएं, और भारत के छात्र भारत में ही रह कर अपनी पढ़ाई पूरी कर सकें। असल चिंता की बात यह है कि विदेश में जाने वाले छात्र वहाँ पढ़कर वही के संस्थानों में अपनी नौकरी खोज कर वहाँ रहने लगते हैं। दूसरा यह है कि यहाँ की तकनीकी टॉप संस्थानों के होनहार युवक विदेशों में मोटी मोटी तनखाह में नौकरी देख कर विदेश चले जाते हैं, इस तरह भारत सरकार का उन पर किए जाने वाला खर्च का फायदा भारतीय संस्थानों को ना होकर विदेशी संस्थाएं उठा ले जाती है। इस तरह प्रतिभा पलायन भारत के लिए और भारतीय शिक्षा पढ़द्वारा तथा भारतीय विश्वविद्यालयों के लिए नुकसानदेह भी है। भारत ने आस्थियान देशों के एक हजार छात्रों ने जिन्हें ऐस्ट्रेलिया, विं 2012 में

किया गया है। जिसके अंतर्गत विदेशी छात्रों की प्रवेश की प्रक्रिया को अल्पतं सरल सुगम बनाना है जिससे ज्यादा से ज्यादा छात्र भारत में पढ़ कर डिग्री हासिल करें अपनी वर्तमान में भारत में आसियान देशों के निवासी छात्रों की संख्या लगभग सवा दो लाख के करीब है मानव संसाधन विभाग द्वारा इसे आगामी वर्षों में चार गुना करना चाहती है। आसियान देशों के छात्र भारत में पढ़ने से थोड़ा हिचकिचाते भी हैं, जिसके अनेक कारणों में से अपराधिक गतिविधियां, प्रदूषण, गर्मी, प्रवेश की लंबी लंबी प्रक्रिया, और भारतीय डिग्री की मान्यता नहीं होना भी शामिल है भारत में बारह से चौदह ऐसे शिक्षा संस्थान हैं, जो

के लिए फलाशप तक 2018 में योजना बनाकर राशि आर्वाट की थी। हर साल 200 से 300 छात्रों को बड़े तकनीकी संस्थानों में डॉक्टरेट की उपाधि देने की योजना बनाई थी। पर बीते वर्ष केवल आसियान देशों के 45 छात्रों ने पंजीयन करवाया था, इस तरह विकासशील देशों के छात्र भी भारत में पढ़ाई के लिए आकर्षित नहीं हो रहे हैं। मानव संसाधन विभाग को उच्च शिक्षा उपयोगी और व्यवसायिक शिक्षा के रूप में दी जानी चाहिए, जिस की उपयोगिता रोजमर्रा के कामों में हो सके और शिक्षा के माध्यम से युवकों को शत-शत रोजगार प्राप्त हो सके। तभी प्रतिभा पलायन में अंकुश लग हमारी शिक्षा पद्धति की उपयोगिता बढ़ेगी।



नरेंद्र तिवारी

शिवराज की पांचवी शपथ में कितने विघ्न कितनी बाधाएं

मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को लेकर अनेकों तरह की चर्चाओं का बाजार गर्म है। इन चर्चाओं को भाजपा आलाकमान की कार्यप्रणाली से खार्ड दे रहा है। एमपी बड़ा सवाल यह बना यप्रदेश के मुख्यमंत्री ग कर चुके प्रदेश के निं सिंह चौहान पांचवी नी शपथ ग्रहण कर राज की पांचवी शपथ कितनी बाधाएं है। रोड़ा बनी इन विध्न दाई तो तो पाया कि को विधानसभा की न होना है। दिसम्बर रेणाम घोषित होगा। अब जबकि एक माह है। प्रदेश की सत्ता आलाकमान की नीति वंह चौहान को पीछे ही है। वह शिवराज बवसे अधिक समय कार्ड बनाया है। वह करीब 5 बार विदिशा ह चुके। वह शिवराज कक पदों का भी लम्बा भी में मामा के नाम से

शिवराज सिंह जनता के जिताऊ चेहरे माने जाते हैं जननीति के अमृत समझे जन क्या अब भाजपा के लिए ? भाजपा आलाकमान लिए तो यहीं दर्शाती प्रतीत किए अनसार मुख्यमंत्री नमतर और किनारे करने दिखाई दे रही है। इसका लिए तो भोपाल के दौरे पर जनता गृह मंत्री अमित शाह ने पूछा था कि आगामी में भारतीय जनता पार्टी त्री का चेहरा कौन होगा जनवाब में कहा शिवराज ही है, चुनाव के बाद आगा, ये पार्टी का काम है नहीं। भाजपा के वरिष्ठ वयों बयान के सीधे मायने हैं है कि एमपी में शिवराज 2023 का विधानसभा जा रही है। इसी क्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी में शामिल हुए। भोपाल 40 मिनिट दिए अपने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह के बारे भी नहीं लिया। के मुख्य विपक्षी दल नगाया की प्रधानमंत्री ने और काम दोनों से कन्नी सब चर्चाओं के बीच ख्यमंत्री शिवराज सिंह सूची में विधानसभा उम्मीदवार के संग इस बात का संग्रह आलाकमान यह अब भाजपा के बह परिस्थितायां 2023 के विधानसिल की जा सकती कुछ बड़े नेताओं और भी शामिल है। इन नेताओं की नहीं करना चाहिए नैतृत्य उद्देश्य दिखाई दे रहा है। प्रदेश में नए भाजपा द्वारा नरेंद्र सिंह तो मरण कुलस्ते एवं कैल चैहरों को मैदान नैतृत्य के उभार दिया है। राजनीति की पांचवीं शपथ शुरू कर दिया सिंह के बयानों आदिवासी बाहुदारी एक कार्यक्रम में पूछना चाहता हूँ रहा हूँ या बुरी। चाहिए या नहीं चाहिए या नहीं प्रश्न कहीं भाजपा देने के लिए तो क्यासों के मार्ग पूर्वनुमान लगाना

पर्य में नाम घोषित होना भी केत माना गया कि भाजपा मान चुका है कि शिवराज लिए अमृत नहीं रहे। अब नहीं है कि उनके नाम से यानसभा चुनाव में विजय सके। क्या भाजपा नैतृत्व को भी के नाम जिसमें शिवराज पहली सूची में शामिलकर गरिमा बढ़ाने की कोशिश नहीं थी। इसके विपरीत हैं हलाहल (विष) मानता है।

चेहरे की तलाश में भाजपा। प्रदेश चुनाव में केंद्रीय मंत्री, प्रह्लाद पटेल, फग्गनसिंह ताश विजयवर्गीय जैसे बड़े नाम में उतारकर प्रदेश में नए की संभावनाओं को बल देतिक विश्लेषकों ने शिवराज थ पर संदेह व्यक्त करना चाहता है। इन संदेहों को शिवराज से भी बल मिला, जब ल्य डिंडोरी जिले उन्होंने मैं भीड़ से कहा 'मैं आपसे कि मैं अच्छी सरकार चला इस सरकार को आगे बढ़ाना मामा को मुख्यमंत्री बनना?' जनता से शिवराज के पा आलाकमान को जवाब नहीं पूछे गए थे। इन सब व्य किसी भी प्रकार का ता उचित नहीं होगा। शायद

चेहरे पर चुनाव नहीं लड़ना आलाकमान की एमपी को लेकर आनीति का हिस्सा हो सकता है। भाजपा अपने रणनीतिक निर्णयों को जारी रखती है। पांच राज्यों में चुनाव लोकसभा चुनाव के पूर्व दो रहे हैं। इन चुनावों को के रूप में देखा जा रहा है। देश का बड़ा राज्य है। चुनाव भी भाजपा आलाकमान के रूपी का सबब माने जा रहे हैं। मिली पराजय भाजपा को भी नुकसान पहुंचा सकती है। ऐसे एमपी में भाजपा की रणनीति के चेहरे पर चुनाव लड़ने की ज़रूरी है। यह रणनीति 2018 में भाजपा को मिली पराजय के आलाकमान द्वारा बनाई गयी थी। भाजपा आलाकमान की इन रणनीतियों के मध्य यह कहने में कोई विरोधी नहीं चाहिए कि एमपी में चार राज्यों का दायित्व सम्भाल चुके अब भी प्रदेश में भाजपा के बचपन है। लाडली बहनों के भाई जनता के मामा को दरकिनारा लड़ा गया हाईकमान को कहीं भारी न से समय जब शिवराज प्रदेश में बढ़ते रुका लड़ा रहे थे। प्रदेश में खिलाफ विरोध की लहर तो शिवराज ही वह चेहरा है जिस पर जनता का विश्वास है। आम लगने वाला शिवराज सिंह का विरोध के बावजूद भी प्रदेश की जनता की नजरों में बना हुआ है। मध्यप्रदेश में चुनाव पूर्व अनुमानों ने शायद आलाकमान को प्रदेश नैतृत्व को लेकर चुप्पी साधने पर मजबूर किया हो। शिवराज की उपेक्षा का खामियाजा। आलाकमान ने शिवराज को चेहरा घोषित नहीं कर सरकार के खिलाफ आ रहे चुनाव पूर्व अनुमानों को सच मानने की मान लिया है। भाजपा के केंद्रीय नैतृत्व की रणनीति के साथ भाजपा के कार्यकर्ता भी शिवराज को 2023 में एमपी के लिए उपयुक्त नहीं मानने की धारणा से ग्रसित हो गए हैं। शिवराज सिंह प्रदेश के एक मात्र लड़ाकू नेता है जो आमजनता के दिलों में राज करते हुए दिखाई दिए। अब जबकि भाजपा आलाकमान एमपी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चेहरे पर चुनाव लड़ने की बात कर रहा है। एक प्रकार से शिवराज के प्रति केंद्रीय नैतृत्व का उपेक्षित रवैय्या भाजपा को नुकसान पहुंचा सकता है। कुलमिलाकर भाजपा हाईकमान का मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री शिवराज चौहान को चेहरा घोषित नहीं करना, शिवराज जैसे बड़े नेता को चौथी सूची में जगह देना, चुनाव पूर्व अनुमानों में एजेंसियों का शिवराज सिंह को कमज़ोर बताना, कमलनाथ का अपनी सरकार गिरने के बाद लगातार भावुक अपील करते रहना। यह बड़े कारण है जो पांचवीं बार शपथ की विधन एवं बाधाएँ दिखाई पड़ रहे हैं। इसके बावजूद शिवराज पूरी शिद्दत के साथ प्रदेश की जनता से जनादेश मांगने के प्रयास में लगे हुए हैं। लोकतंत्र में जनता ही सबसे बड़ी ताकत होती है।

अपने में ही मग्न हैं मिडल ईस्ट के देश

‘मैं अल्लाह से तुम सबकी शिकायत करूँगा। मैं उसे सब बताऊँगा।’ ये उस बच्चे के अखिरी शब्द थे, जो वर्ष 2021 में सीरियाई हमले में घायल हुआ था। इन शब्दों के पीछे छिपी गहरी मानवीय संवेदना को न मध्य-पूर्व के क्लूर शासक देख पाए न चरमपंथी ताकतें और न ही पश्चिम का पाखंडी उदारवाद। ताकतें कैसी भी हों, वे संवेदनहीन होती हैं।

यही दुनिया ने विश्व युद्धों सहित तमाम युद्धों में देखा और अभी भी यूक्रेन, गाजा और इस्लाइल में देख रही है। इसी वजह से यह सवाल भी खड़ा हो रहा है कि क्या आने वाले समय में यह असार्थी पूरे विश्व में एक बड़े युद्ध के रूप में दिखाई देने लगेगी।

आतंकी हमले का संदेश

बीती 7 अक्टूबर को गाजा पट्टी पर काबिज फलस्तीनी आतंकवादी संगठन हमास ने दक्षिणी इस्लाइल पर जिस तरह का हमला किया, वह इस्लाइल को ही नहीं बल्कि दुनिया को चौकाने वाला था। हमले में अगवा हुए और मारे गए लोगों की संख्या इतनी बड़ी है कि इसे कुछ लोग होलोकॉस्ट (यहूदी नरसंहार) की पुनरावृत्ति के रूप में भी देख रहे हैं।

अब भले इस्लामी प्रशासन इस आतंकी हमले की प्रतिक्रिया बहुत उग्र तरीके से दे रहा है, लेकिन पूरी दुनिया को यह संदेश तो चला ही गया कि सत्ता यदि लापरवाह (घरेलू राजनीति में) हो जाए तो सुरक्षा संकट में पड़ जाती है। इस हमले का एक सच हमास का आतंकवाद है जो दारा तेज़ाग

की सत्ता में बने रहने की वह मानसिकता भी है, जिसने इस्माइली हितों को गिरवी रख दिया। इसी कारण मोसाद जैसी प्रभावशाली खुफिया एंजेंसी भी यह जानने में फेल हो गई कि हमास पिछले आठ महीनों से अंदर ही अंदर किस तरह की तैयारी कर रहा है। बहरहाल, हमास ने जो किया उसे किसी भी स्थिति में सही नहीं ठहराया जा सकता, लेकिन इसके दोषी चौतरफा हैं। सबसे पहले इस्लामी देशों के संगठन ऑर्गानाइजेशन ऑफ इस्लामिक कोऑपरेशन की बात करते हैं। ओआईसी ने जिस तरह अरब राष्ट्रवाद को रौदा और स्वयं को खड़ा किया, उसी का परिणाम है कि फलस्तीन आज बिखरा हुआ है और अपने छोटे-छोटे टुकड़ों में अस्तित्व ढूँढ़ रहा है। हमास इन्हीं टुकड़ों में फलस्तीन के बनते-बिखरते सपनों पर पानी फेर रहा है और अरब-इस्लामी दुनिया मूक दर्शक बनी हुई है। अभी भी इस्लामी दुनिया के नेताओं से यह पूछने की जरूरत है कि वे फलस्तीन का रिप्रेजेंटेटिव किसे मानते हैं उस फलस्तीनी प्राधिकरण को जिसका नेतृत्व महमूद अब्बास कर रहे हैं या फिर इस्माइल हानिया को, जो हमास के चीफ ऑफ पॉलिटिकल ब्यूरो हैं?

उनकी नजर में फलस्तीनी सत्ता का वास्तविक केन्द्र कौन सा है रामल्ला या गाजा पट्टी? डॉनल्ड ट्रंप के शासन काल में अमेरिकी लीडरशिप में अब्राहम एकॉर्ड साइन हुआ था। क्या बाइडन प्रशासन ने इसे लागू कराने का प्रयास किया? प्राप्तवाया तर्मीं। दो

भी नहीं सकता। मध्य-पूर्व के प्रमुख देशों के इसमें शामिल हुए बगैर यह किसी निष्कर्ष तक कैसे पहुंच सकता है? सुन्नी दुनिया का नेता और मध्य-पूर्व का प्रमुख देश सऊदी अरब तक इसमें शामिल नहीं हुआ। शायद इसलिए कि उसे पता था फलस्तीन मसला इतनी आसानी से सुलझने वाला नहीं है।

इसका एक पहलू यह भी है कि सऊदी अरब को पता है, यदि वह भी अब्राहम एकॉर्ड का हिस्सा बन जाएगा तो इसाइल विरोध की कमान पूरी तरह से ईरान के हाथ में पहुंच जाएगी। यह स्थिति रियाद के मुकाबले तेहरान को मजबूत करेगी और रियाद को यह स्वीकार्य नहीं होगा।

शिया और सुन्नी दुनिया के बीच अभी भी इतनी बड़ी विभाजक रेखा खिंची हुई है, जिसे पाटा जाना आसान नहीं है। इसे देखकर कोई भी फलस्तीन के भविष्य की रेखाएं पढ़ सकता है। मगर फिलहाल हमें इस सवाल का उत्तर तलाशना होगा कि इसाइल और हमास के बीच संघर्ष क्या वास्तव में वैसा ही है जैसा कि इसे प्रस्तुत किया जा रहा है।

यदि ऐसा है तो वह अरब राष्ट्रवाद कहां दफन हो गया जो अपनी परिधि में फलस्तीन को लाए बिना पूरा ही नहीं होता था? आज स्वयं मध्य-पूर्व ग्रेट डिवाइड का शिकार है और इस क्षेत्र के इस्लामी देश अपने-अपने हितों के लिए विभिन्न मिलिशिया समूहों का प्रयोग कर रहे हैं, चाहे वह हिजबुल्ला हो या हमास। इस संर्वांग में एजिना परिणाम पार्ही

एक नजर डालने की जरूरत है। मध्य पूर्व या पश्चिम एशिया में 18 देश आते हैं। इनकी राहें अलग-अलग हैं और सभी बढ़ती हुई नफरत व हिंसा के शिकार हैं। इस्माइल, ईरान को पसंद नहीं करता। इराक सीरिया को नापसंद करता है, सीरिया तुर्की को और तुर्की इस्माइल को। यही नहीं कुवैत और इराक के बीच भी छत्तीस का आंकड़ा है। लेबानान, ओमान व जॉर्डन में आतंकवाद की जड़ें इतनी गहरी हैं कि कभी भी विस्फोटक स्थिति पैदा हो सकती है। मध्य पूर्व के देशों के अंदर पनपती यह नफरत और हिंसा टाइम बम का रूप ले चुकी है। इसे यदि डिफ्यूज नहीं किया गया तो हमास जैसे समूह ऐसे कांड करते रहेंगे। सबसे बड़ा सवाल ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या यह लड़ाई हमें इतिहास की उन घटनाओं तक घसीट कर ले जाने का संकेत दे रही है जो विश्व युद्धों के लिए जिम्मेदार मानी जाती हैं। गौर से देखें तो हम इस समय प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के पहले की छोटी-छोटी हिसातक घटनाओं या लघु व मध्यम स्तर के युद्धों की पुनरावृति के दौर से गुजरते लगते हैं। फिर चाहे वह यूक्रेन के मैदान में चल रहा रूस-यूक्रेन युद्ध हो या इस्माइल-हमास के बीच युद्ध। यह रास्ता दुनिया को उन दो विश्व युद्धों की ओर देखने के लिए विवश कर रहा है। जाहिर है, यहां से आगे एक-एक कदम फूँक-फूँक कर रखने की जरूरत है।

एक लॉलीपॉप और पापा का पर्स

पालू और थार का किस्सा अभी खत्म नहीं हुआ। पिछले ब्लॉग के लिए जब थार की फोटो इंटरनेट से डाउनलोड कर रहे थे तब भी हमारे छुट्टू क्यही कह रहे थे...पापा थार ऑडर कर रहे हो क्या? खैर...थार की प्यार भरी धार से आगे निकलते हैं। जिन्होंने पिछला ब्लॉग नहीं पढ़ा उन्हें बता देते हैं कि व्योमित मेरा साढ़े तीन साल का बेटा है, जिसे हम घर में प्यार से पालू पुकारते हैं पिछले ब्लॉग में उसकी थार की जिद पर बात की थी। उसने क्या कहा, यह जानने के लिए पहले उसकी और हमारी केमिस्ट्री समझनी होगी। हम दोनों के बीच एक सीक्रेट डील है। यह वो सीक्रेट है जो उसकी मम्पी नहीं जानती। हालांकि ऐसा उसे लगता है। चलिए बताते हैं कि यह सीक्रेट डील है क्या? अमूमन छुट्टी के वक्त उसे स्कूल से लेने मैं ही जाता हूँ। दफ्तर से निकलकर दौड़ते भागते जब हम पहुंचते हैं तो सारे बच्चे स्कूल के बरामदे में इकट्ठा हो चुके होते हैं सारे साढ़े तीन से चार साल के बीच के बच्चे एक दूसरे के साथ चुहलबाजी करते दिखते हैं। कोई किसी के बाल घसीट रहा होता है।

कोई दूसरे को टिप्पिया रहा होता है। इन सबके बीच हमारे पालू सबसे पीछे चुपचाप से खड़े नजर आते हैं। हाफ पैट से बाहर ज्ञाक रही शर्ट इशारा कर रही होती है कि क्लास की धमचौकड़ी इस वक्त मासूमियत के मुख्यटे में छिपाई जा रही है। सुबह चमकने वाले जूतों पर जतों के ही निशान पड़ चुके होते हैं। ये निशान एक दूसरे के जूते पर जूता मारने वाले खेल की चुगली करते हैं। आईकार्ड गले से उत्तरकर बैग में सिमट गया होता है। बिखरे हुए बाल और बिगड़ चुके होते हैं। हां, इन सबके बीच वह धूप में बाहर जाने वाली कैप और पानी की बाटल पूरी जान से सहज कर रखता है। गले में पड़ा बैग और उसके ऊपर ही गले में पड़ी पानी की बोतल घर जाने की उसकी बेचैनी बयां कर रही होती हैं। खैर इन सबके बीच उसकी खोयी खोयी सी आँखें दरवाजे पर अपने पापा को तलाश रही होती हैं। जैसे जैसे एक-एक बच्चा अपने मम्मी या पापा के साथ जा रहा होता है वैसे वैसे मासूमियत मायूसी में बदलती जाती है। शीशे के दरवाजे से दाखिल होते हर शख्स में उसे अपने पापा की झलक का एहसास होता

है। ... और इस बीच जैसे ही मुझे दाखिल होते देखता है तो वह बाकी बच्चों की तरह दौड़कर गले नहीं लगता। जो आंखें कुछ पल पहले मुझे तलाश रही होती हैं वह मुझे देखते ही पलकों में छिपते हुए झुक जाती हैं। एक मुस्कान चेहरे पर आती है लेकिन उसे छिपाने की वह पूरी नाकाम कोशिश करता है। इस छुपनछुपाई में तिरछे मुंह से मुस्कुराता है और चूपचाप मेरी ओर कदम बढ़ाने लगता है। हाँ, इस बीच नजरें अपनी मैम की ओर जरूर धूमाता हैं। बिना कुछ बोले इस उम्मीद में देखता है कि वह बोल देंगी ...

वह भी इजाजत मांगने वाली उसकी निगाहें को बखूबी पहचानी हैं और बस दो शब्द बोल देती हैं जिसका वह इंतजार कर रहा होता है... फिर क्या? दौड़ पड़ता है और आकर मेरे पैरों से चिपक जाता है। गले से बैग और बोतल उतारकर मुझे थमाता है और हम बाहर की ओर निकल पड़ते हैं। यहां से शुरू होती है एक चिज्जी यानी लॉलीपॉप की डिमांड। रोज स्कूल से लौटते वक्त एक केक की दुकान से चिज्जी लेनी होती है। इसी लॉलीपॉप की चाह में बाइक की टंकी पर बैठ

जाता है। धूप में तपती टंकी का इस वक्त उसे एहसास नहीं होता है क्योंकि मन इस ऊहापोह में रहता है कि पापा लॉलीपॉप दिलाएँगे कि नहीं? पूरे रास्ते इस बात की याद दिलाता रहता है कि पापा केक की दुकान पर रुकना है। हम भी थोड़ा परेशान करते हुए कहते हैं कि आज नहीं। खैर ज्यादातर इस संवाद का अंत दुकान पर पहुंच कर लॉलीपॉप लेने से होता है। यहां आती है सीक्रेट डील। दरअसल लॉलीपॉप दिलाने के साथ यह भी पहले से तय होता है कि यह बात मम्मी को नहीं बतानी है। केक की दुकान घर के पास ही है, ऐसे में हाथ में लॉलीपॉल लिए घर पहुंचता है।

केन्द्रीय सशस्त्र बलों में बढ़ता मानसिक तनाव



डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

देश की आंतरिक सुरक्षा कायम रखने में प्रमुख भूमिका निभाने वाले देश के अर्द्धसैनिक बल के सैनिकों में बढ़ता मानसिक तनाव बेहद चिंतनीय है। मजे की बात यह है कि पिछले एक दशक में इसमें लगातार बढ़ती हो रही है। ऐसा नहीं है कि सरकार या यों कहें कि केन्द्रीय गृह मंत्रालय समस्या की गंभीरता से नावाकिफ है औरपितु सभी स्तर पर चिंतन मनन के बाद भी अभी कोई ठोस परिणाम नहीं अस्या की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि बलों में आत्महत्या के मामलें तो बढ़े ही हैं साथ ही के मामलें भी लगातार सामने आ रहे हैं। दरअसल और अर्द्धसैनिक बलों की कार्यप्रणाली को भी समझना याओं को भी ध्यान में रखना होगा। इसमें कोई दो क बल जहां बार्डर पर कठिनतर परिस्थितियों में नजब बहां उनका टेनोर पूरा हो जाता है तो उसके बाद व कम जोखिम वाले स्थानों पर होती है तो सैनिकों प्रताल भी बेहतरीन सुविधा व विशेषज्ञयुक्त होने के परिजनों को भी बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध और अर्द्ध सैनिक बलों की तैनाती पूरी तरह से देखा स्थितियों से भरी होती है। चाहे वह नक्सल प्रभावित र जम्मू कश्मीर में शारीत व्यवस्था की हो या असम ति व्यवस्था बनाए रखने की हो। इसके अलावा देश में किसी कारण से अशांति के हालात होते हैं या लात होते हैं तो व्यवस्था के नाम पर अर्द्धसैनिक आम बात है। ऐसे में काम की अधिकता, सेवा के व्यक्तिगत कारण संवेदनशील व्यक्ति को बहुत देते हैं।

आईएसएफ, आईटीबीपी, एसएसबी आदि आते हैं। त्रालय द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार 2020 में रोगी चिन्हित किए गए इनमें से सर्वाधिक 1882 7 बीएसएफ, 530 असम राइफल्स, 472 17 आईटीबीपी और 312 एसएसबी के हैं। गृह द्वारों के अनुसार ही 2017 से 2022 के बीच अर्द्ध नकों के बीच आपसी गोलीबारी में 57 कर्मियों की 18 से 2022 के बीच 658 कर्मियों के आत्महत्या ह स्थिति आज भी है। इससे यह साफ हो जाता है कि बड़ी समस्या है और इसे दूर करने के लिए ठोस की अतिआवश्यकता है। हालांकि इस समस्या का लिए टास्क फोर्स के गठन से लेकर कई इ है पर हालात में अभी तक जिस तरह के बदलाव

नहीं आ पाये हैं। दरअसल आधुनिक जीवन पद्धति जिंदगी में मानसिक तनाव इस तरह हाबी रहता है जब भी व्यक्ति डिप्रेशन का शिकार हो जाता है। स्थल की परिस्थितियां, दूसरी और परिवारिक सीसरी और परिवारिक तात्कालिक वापां, चौथा कार्य स्थल पर रेस्ट करने का पर्याप्त समय आंचवां आवश्यकता पर या चाहने पर छुट्टियां नहीं अन्य कई छोटे मोटे कारण हो जाते हैं जिससे व्यक्ति नहीं है। रुपये पैसे की समस्या भी एक प्रमुख कारण

व की इस समस्या का समाधान इसलिए जरुरी हो एक और मानसिक रोग बढ़ता जा रहा है वहीं करीब गरा समयपूर्व नौकरी छोड़ना अपने आप में गंभीरता सबके लिए मनोचिकित्सकों का होना आवश्यक हो तो अन्य देशों की तुलना में देश में मनोचिकित्सकों हैं वहीं अद्वैतिक बलों में मनोचिकित्सकों की ओर भी कम है। एक मोटे अनुमान के अनुसार बीएसएफ में 4, असम राइफल्स में 1, आईटीबीपी नवी में केवल एक मनोरोग संबंधी डॉक्टर है। इसमें सकती है पर ऐसे में मानसिक तनाव के इलाज की नी होगा। इसके लिए सरकार और इस क्षेत्र में कार्य संगठनों को आगे आना होगा। सरकार को भी समय कमेटियों की रिपोर्ट का अध्ययन कर व्यावहारिक

करने पर गंभीरता से आगे आना होगा। गैर सरकारी सैनिक बलों के क्षेत्रों को अपना कार्य क्षेत्र बनाना की गतिविधियां संचालित करनी होगी जिससे तनाव बढ़े। इसके लिए समय समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों वृच्छा, योगा क्लासेज, मनोरंजक गतिविधियां और व व कम करने वाली गतिविधियां आदि आयोजित की जानी चाही तनाव को कम करने में सहायता मिल सके। इसी विकासकों की सेवाएं उपलब्ध कराने की व्यवस्था यकृता पर आसानी से अवकाश मिलने और सेवा के प्रावधान किये जाये ताकि कार्मिक में अन्य करने पर किसी तरह की हीन भावना ना आए।

कनक दुर्गा मंदिर विजयवाड़ा



विजयवाड़ा की परिभाषित विशेषताओं में से एक इन भूमियों पर देवी दुर्गा का प्रभाव है। कनक दुर्गा का मंदिर, जिसे श्री दुर्गा मल्लेश्वर स्वामी मंदिर भी कहा जाता है, विजयवाड़ा में सबसे प्रतिष्ठित पूजा स्थलों में से एक है। इंड्रिकलाली पहाड़ियों के ऊपर स्थित, कनक दुर्गा मंदिर को शक्ति, धन और सदृग का प्रतीक माना जाता है। कनक दुर्गा मंदिर आंध्र प्रदेश राज्य का दूसरा सबसे बड़ा मंदिर है और तिरुमाला की तुलना में लोकप्रिया में कम नहीं है।

कनक दुर्गा मंदिर का इतिहास

कनक दुर्गा मंदिर, या कनक दुर्गामा की पवित्र पांठ, का एक प्राचीन इतिहास है। इसका निर्माण 8वीं शताब्दी में मौगलालया शासक थानिशा द्वारा किया गया था और इसका प्रबंधन कोडापल्ली के उनके मंत्री अक्कन्ना और मदन्ना द्वारा किया जाता।

इस मंदिर का दौरा चीनी यात्री हेन त्वांग ने भी किया था। कनक दुर्गा मंदिर में विभिन्न राजवंशों के शिलालेख हैं जो पुराने समय की गवाही देते हैं। मंदिर परिसर में विभिन्न देवताओं के उपमंदिर भी हैं। उत्तर-पूर्व कोने पर भगवान श्री मल्लेश्वर स्वामीकर और श्री नराज स्वामी मंदिर को उत्तर की ओर श्री सुब्रह्मण्यश्वर स्वामी को समर्पित मंदिर है।

कनक दुर्गा मंदिर उन दुर्लभ मंदिरों में से एक है जिन्हें स्वयंभू माना जाता है। श्री शंकर भगवत्पादलु (आदि शंकराचार्य) ने मंदिर का दौरा किया था और देवी के चरणों में श्री चक्र स्थापित किया था।

कनक दुर्गा मंदिर के पांठ की किंवदंतियाँ ऐतिहासिक विवासत के अलावा, कनक दुर्गा मंदिर से बहुत सारी लोककथाएँ और



आध्यात्मिक मान्यताएँ जुड़ी हुई हैं। एक पौराणिक कथा के अनुसार, कृष्ण नदी को क्षेत्र की सभी पवाड़ियों और पवतों से मार्ग दिया गया था ताकि वह समुद्र में विलोन हो सके। जब इंद्रकीलाली पहाड़ी उनके रास्ते में आई, तो सभी देवताओं ने पहाड़ी से शक्तिशाली कृष्णा नदी के लिए रास्ता बनाने का अनुरोध किया, जिसे अंततः पहाड़ी ने स्वीकार कर लिया। हालांकि कृष्णा नदी ने अधिक जगह ले ली और भगवान मलकुदरू तक लगभग चार मील नीचे की पहाड़ी के एक हिस्से को भी अपने साथ ले लिया। इसे थलुकोडा या तैती हुई पहाड़ी के नाम से जाना जाता है।

कनक दुर्गा मंदिर उन दुर्लभ मंदिरों में से एक है जिन्हें स्वयंभू माना जाता है। श्री शंकर भगवत्पादलु (आदि शंकराचार्य) ने मंदिर का दौरा किया था और देवी के चरणों में श्री चक्र स्थापित किया था।

कनक दुर्गा मंदिर के पांठ की किंवदंतियाँ ऐतिहासिक विवासत के अलावा, कनक दुर्गा मंदिर से बहुत सारी लोककथाएँ और

तक बढ़ने की शपथ ली थी, जहां मंदिर स्थित है।

कनक दुर्गा मंदिर में त्यौहार

दशहरे के त्यौहार के दौरान मंदिर अपनी भव्यता पर होता है। नववरात्रि के नौ दिनों को बहुत ही उत्साह और आस्था के साथ मनाया जाता है। देवी को प्रत्येक नौ दिन अलग-अलग रूपों और पोशाकों में सजाया जाता है जो उनके विभिन्न रूपों के दर्शाता है।

विभिन्न रूप या अलंकार हैं अन्नपूर्णा, महिषासुरमर्दिनी, बालात्रिपुरा सुंदरी, महा लक्ष्मी, ललिता त्रिपुरा सुदर्शन, गायत्री, सरस्वती, दुर्गा देवी और राज राजेश्वरी देवी।

इसके अलावा एक अन्य किंवदंती के

अनुसार, देवी दुर्गा ने एक बार कृष्णा नदी से नाक की अंगूठी उधार ली थी और इसे कभी वापस नहीं लौटा। इसलिए देवी दुर्गा की नाक की नथ कपी नहीं तैरी जाती। पौराणिक कथा के अनुसार, कलयुग युग में कृष्णा नदी ने अपना स्तर पहाड़ी की चाटी

विजयवाड़ा की भूमि पर देवी कनक दुर्गा के व्यापक प्रभाव को दर्शाता है। इसके अलावा कनक दुर्गा मंदिर में मनाए जाने वाले अन्य त्यौहार मार्च/अप्रैल के महीनों में शिवरात्रि कल्याणम और नवंबर/दिसंबर के महीनों में भवानी दीक्षा है।

कनक दुर्गा मूर्ति मंदिर में सेवा करने की एक प्रापाली है जो दैनिक, साप्ताहिक या कुछ विशेष अवसरों पर भी हो सकती है। कुछ सुविधाएँ पूजा या आजीवन भुगतान प्रदान करती हैं। मंदिर में अच्युतसंकार जैसे धाराकरण समरोह, नामकरण संस्कार, विवाह भी करने की अनुमति है।

तीर्थयात्रियों के लिए चार प्रकार के दर्शन उपलब्ध हैं।

धर्म दर्शनम् - समय सुबह 5 बजे से रात 9 बजे तक है।

अंतरालयम दर्शनम् - समय सुबह 5 बजे से रात 9 बजे तक है। इसकी लागत लगभग INR25 है और एक समय में एक व्यक्ति को अनुमति है।

अंतरालयम दर्शनम् - समय सुबह 5 बजे से रात 9 बजे तक है। इसकी लागत लगभग 50 रुपये है और एक समय में एक व्यक्ति को अनुमति है।

माघलक्ष्मी मंदिर हैदराबाद



800 साल पुराना है

भग्यलक्ष्मी मंदिर

हैदराबाद के माहारूप चार मीनार के दक्षिणपूर्व मीनार से सटे हुए ही

भग्यलक्ष्मी मंदिर है। ये मंदिर मां

लक्ष्मी का है। इस मंदिर की छत

टिन की तो खेंच बांस के बने हैं।

तिरपाल से ढंका ये मंदिर चार

मीनार का दक्षिणपूर्व मीनार के

पीछे की दीवार से एकदम सदा

एक पथर हुआ करता था जिसपर

है। मंदिर कब बना और किसने बनवाया इसकी स्पष्टता का अभाव है, लेकिन मंदिर के पुराणों का दावा है कि ये मंदिर करीब 800 साल पुराना है।

पत्थर पर बड़ी थी देवी की तस्वीर भग्यलक्ष्मी मंदिर में चार पीठियों से पूजा करते आ रहे पुजारी के अनुसार मंदिर के स्थान पर पहले एक दक्षिणपूर्व मीनार के दीवार से एकदम सदा एक पथर हुआ करता था।

भग्यलक्ष्मी मंदिर की दावों के अनुसार इसकी दीवारों की लंबाई 1591 में शुरू हुआ था।

भग्यलक्ष्मी से भाग्यवत्त तक

मंदिर में पूजा करने से दूर्घाती और समृद्धि आती है और यह कारण है कि हैदराबाद का नाम हिंदुवादी

संगठन भग्यलक्ष्मी मंदिर के नाम पर ही रखना चाहते हैं और शहर की नाम भग्यगण का नाम है।

भग्यलक्ष्मी मंदिर के नाम हिंदुवादी

संगठन भग्यलक्ष्मी मंदिर के नाम है।

12वें दिन भी गाजा में नहीं घुसा इजराइल

तेल अवीव, 18 अक्टूबर (एक्स्प्रेसिंग डेस्क)। गाजा पर ग्राउंड अटैक के लिए इजराइल 12 अक्टूबर से धमकी दे रहा है।

साउथ बाईर पर हथियार, गोलाबारूद और टैक्स के साथ करीब 1 लाख इजराइली सैनिक तैनात हैं। 3 लाख से ज्यादा रिवर्ज सैनिकों को मोबाइल इजराइली जा रहा है। इजराइल डिफेंस फोर्स यारी आईडीएफ ने 13 अक्टूबर को फिलिस्तीनी लोगों को उत्तरी गाजा खाली करके दक्षिण की तरफ शिपर होने को कहा। तभी से गाजा पट्टी की चर्चा है। हालांकि, जग के 12वें दिन भी इजराइल ने जमीनी हमास नहीं शुरू किया है। हमास को जड़ से खत्म करने के लिए क्या है इजराइल के ग्राउंड अटैक का प्लान। इस ऑपरेशन में कैनू-सा मूसीबतें इजराइली सेना का इंतजार कर रही हैं, इसी की पड़ताल करती रिपोर्ट।

7 अक्टूबर को हमास के सरप्राइज अटैक के बाद से ही इजराइल आक्रमक कार्रवाई कर रहा है। उसकी एयरफोर्स हमास के टिकानों के निशाना बना रही है। हालांकि, हमास ने पुरे गाजा पट्टी में करीब 500 किमी लंबा सुरंगों का नेटवर्क बना रखा है। हमास के उग्रावादी आवादी के बीच रहते हैं। इस वजह से हवाई हमले उत्तर कारगर साखित नहीं हो रहे।

इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन से कहा है कि

हमास को जड़ से उखाड़ने का प्लान तैयार, लेकिन मुश्किलें रोक रहीं

वो गाजा में जमीनी रास्ते से सैनिक भेजें। इजराइल की नवी ने सारे समुद्री रास्तों को अपने कब्जे में ले लिया है, जिसमें हमास तक पानी के रास्ते हथियारों की सप्लाई न हो पाए। इजराइल ने गाजा पट्टी में पावर सप्लाई काट दी है। प्लूल और पानी को सप्लाई भी बंद कर दी है। ऐसा इसलिए किया है ताकि हमास को कमज़ोर किया जा सके।

ऐसे में अगर गाजा पर कार्रवाई की जाती है तो सुप्रक्रिया है कि इजराइली सेना इसे दो हिस्से में बाट देगी। गाजा पट्टी के बीच में पड़ने वाला शर्कर अल-बलाह डिवाइंडिंग पॉइंट बनेगा।

इजराइली सेना पहले उत्तरी हिस्से में तायिल होकर हमास के सभी टिकानों को तबाह करेगी। उसके बाद दक्षिणी हिस्से को खाली करना चाहिए।

इजराइली सेना के लिए यह एक अपरेशन है।

गाजा पट्टी के बात करें तो यह कुछ ऐसा ही इताका है। अगर इजराइल यहां घुसता है तो यह अब तक का सबसे कूर अवन वॉर फेयर का उदाहरण बनेगा। गाजा पट्टी का इलाका 365 स्क्वायर किमी में फैला हुआ है। यह 41 किमी लंबा है और महज 6 से 12 किमी चौड़ाई में है।

सिर्फ गाजा शहर में हर एक स्क्वायर किमी में 9 हजार लोग रहते हैं। माना जा रहा है कि इतने छोटे इलाके में दुनिया में और कहीं भी इन्हें लोग नहीं रहते हैं। इसी तरह यहां के बाकी शहरों के भी हाल है। इसके बाद यहां से भी इस परिस्थिति से निपटने के लिए रणनीति जरूर तैयार की होगी।

हमास के राफेदस का जारीरा इजराइल के लिए चुनौती

हमास के पास राफेदस और माटर्क रक्षा जारीरा है। वो इस हमले की तैयारी पिछले साल से ही कर रहा है। इजराइल के लिए हमास के पास हजारों की संख्या में हथियार मौजूद है। अगर इजराइल डिफेंस फोर्स के जलानीति जरूर रास्ते गाजा पट्टी में घुसती है तो उसे एक कड़े मुकाबले का सामना करना पड़ेगा।

डोर्स के हमास के पंख लगा दिए हैं

7 अक्टूबर को हमास के हमले के जो शुरूआती वीडियो सामने आए उसमें साफ देखा जा सकता है कि हमास ने तब पहले दस्ती लिस्ट में 64 प्रत्याशियों की घोषणा की गई है। वहीं पहली लिस्ट में 21 प्रत्याशियों के नाम शामिल हैं। इसके बाद बीजेपी से 86 सीटों पर उम्मीदवारों के चेहरे समें आए गए हैं। कुल 44 एवं चेहरों को भाजपा मौका दे रही है। भाजपा की ओर से अब स्पष्टिकरण बाकी रह गया है। इनमें बेलतरा, बेमेतरा, कसडोल और अंबिकापुर शामिल हैं। भावना बोहरा जिला पंचायत में साधारित है और उसकी सुसाराल से बाकायदा बैंड-बाज़ार और अतिवादीजी के साथ बारात निकलती और उसे बारात निकल देती। करीब एक साल बाद साक्षी को पता चला कि जिस शख्स के साथ उसकी शादी हुई है, उसने पहले से दो शादियां कर रखी हैं। उसके पांचों के निचे की जमीने खिसक गई है।

पति की वेपाई और सपुत्रालालों की प्रताइना

साक्षी कहती है, सब कुछ

जानने के बाद भी मैंने हिम्मत नहीं होती और रिश्ते को किसी तरह

शहरों के अंदर जगह-जगह हमास ने अपने टिकानों वाले रखे हैं। ऐसे इलाके में हथियारों से लैस सैनिकों का चल पाना मुश्किल होता है। टैक्स और हथियारबंद वाहन भी शहरों में अंदर नहीं जा पाते। ऊपर से 7 अक्टूबर के बाद इजराइल को तरफ से जो रोकेट दागे गए हैं उनमें गाजा पट्टी के अंदर नहीं जा पाते।

ऐसे में अगर गाजा पर कार्रवाई

की जाती है तो सुप्रक्रिया

है कि इजराइल को घुसते ही हमास

ने उत्तरी हिस्से में घुसती है।

हमास को जड़ से उखाड़ने का प्लान तैयार, लेकिन मुश्किलें रोक रहीं

हैं जो गाजा पर कार्रवाई की चर्चा है।

हमास को जड़ से उखाड़ने का प्लान

है कि इजराइल को घुसते ही हमास

ने उत्तरी हिस्से में घुसती है।

हमास को जड़ से उखाड़ने का प्लान

है कि इजराइल को घुसते ही हमास

ने उत्तरी हिस्से में घुसती है।

हमास को जड़ से उखाड़ने का प्लान

है कि इजराइल को घुसते ही हमास

ने उत्तरी हिस्से में घुसती है।

हमास को जड़ से उखाड़ने का प्लान

है कि इजराइल को घुसते ही हमास

ने उत्तरी हिस्से में घुसती है।

हमास को जड़ से उखाड़ने का प्लान

है कि इजराइल को घुसते ही हमास

ने उत्तरी हिस्से में घुसती है।

हमास को जड़ से उखाड़ने का प्लान

है कि इजराइल को घुसते ही हमास

ने उत्तरी हिस्से में घुसती है।

हमास को जड़ से उखाड़ने का प्लान

है कि इजराइल को घुसते ही हमास

ने उत्तरी हिस्से में घुसती है।

हमास को जड़ से उखाड़ने का प्लान

है कि इजराइल को घुसते ही हमास

ने उत्तरी हिस्से में घुसती है।

हमास को जड़ से उखाड़ने का प्लान

है कि इजराइल को घुसते ही हमास

ने उत्तरी हिस्से में घुसती है।

हमास को जड़ से उखाड़ने का प्लान

है कि इजराइल को घुसते ही हमास

ने उत्तरी हिस्से में घुसती है।

हमास को जड़ से उखाड़ने का प्लान

है कि इजराइल को घुसते ही हमास

ने उत्तरी हिस्से में घुसती है।

हमास को जड़ से उखाड़ने का प्लान

है कि इजराइल को घुसते ही हमास

ने उत्तरी हिस्से में घुसती है।

हमास को जड़ से उखाड़ने का प्लान

है कि इजराइल को घुसते ही हमास

ने उत्तरी हिस्से में घुसती है।

हमास को जड़ से उखाड़ने का प्लान

है कि इजराइल को घुसते ही हमास

ने उत्तरी हिस्से में घुसती है।

हमास को जड़ से उखाड़ने का प्लान

है कि इजराइल को घुसते ही हमास

ने उत्तरी हिस्से में घुसती है।

हमास को जड़ से उखाड़ने का प्लान

है कि इजराइल को घुसते ही हमास

ने उत्तरी हिस्से में घुसती है।

हमास को जड़ से उखाड़ने का प्लान

है कि इजराइल को घुसते ही हमास

ने उत्तरी हिस्से में घुसती है।

MARUTI SUZUKI ARENA

नई
EECO
हर सफर
बने खास



SCAN TO
CHAT
WITH US

लाजवाब माइलेज

PETROL ** CNG **
19.71 km/l 26.78 km/kg



1.2L एडवांस्ड K सीरिज
डुगल चेट, डुगल VVT इंजन



डिजिटल इंस्ट्रुमेंटल वलस्टर



इंजन इमोबिलाइजर



11 सेप्टेंटी फोचर्स,
डुगल एरबैंस के साथ

UP TO 100%
ON-ROAD
FUNDING
AVAILABLE

EECO
₹ 41000*
तक की बचत

EECO



E-book today at www.marutisuzuki.com or visit your nearest Maruti Suzuki dealership.

AUTHORISED DEALERS: TELANGANA STATE: SRI JAYARAMA: (MEHABUBNAGAR) CALL: 8096998841. WIN MOTORS: (WARANGAL) CALL: 8688828002. ADARSHA: (KARIMNAGAR) CALL: 9133308022, (WARANGAL) CALL: 7799790501. VARUN: (NIZAMBAD) CALL: 8462236236, (KARIMNAGAR) CALL: 0878-2950555. PAVAN: (NALGONDA) CALL: 8790902131. E-OUTLETS: ADARSHA: (MANCHERIAL) CALL: 8886006633, (NIRMAL) CALL: 9133307720, (JAGITYAL) CALL: 8886776633, (GODAVARIKHANI) CALL: 8886556633, (ADILABAD) CALL: 7799784536, (JANGAON) CALL: 8886256633, (SIDDIPET) CALL: 9581656633. VARUN (KAMAREDDY) CALL: 9966111132, (ARMUR) CALL: 9052022990, (KOTTAGUDEM) CALL: 9885260333. PAVAN: (MIRYALAGUDA) CALL: 8790902154, (KODADA) CALL: 8790902135. SRI JAYARAMA: (SHADNAGAR) CALL: 8096998841, (WANAPARTHY) CALL: 8096998841. MITHRA AUTO: (KHAMMAM) CALL: 8886063524. SAI SERVICE: (ZAEERABAD) CALL: 7331168888, AUTHORISED DEALERS: HYDERABAD: ACER: (TIRUMALIGIRI) CALL: 9154073240. AUTOFIN: (BOWENPALLY) CALL: 040-67292222. JAYABHERI: (GACHIBOWLI) CALL: 8100823456. PAVAN: (SERILINGAMPALLY) CALL: 7093711199. VARUN: (BEGUMPET) CALL: 040-4487676, (BANJARA HILLS) CALL: 040-4487676, (KUKATPALLY) CALL: 040-44587676, (VANASTHALIPURAM) CALL: 040-24029979, (GACHIBOWLI) CALL: 040-49497676. RKS: (SOMAJIGUDA) CALL: 9848898488, (MALAKPET) CALL: 9848898488, (SECUNDERABAD) CALL: 9848898488, (KUSHALGUDA) CALL: 9848898488, MITHRA: (HIMAVATHNAGAR) CALL: 040-27634444, (MEHDIAPATNAM) CALL: 7799884949. SAI SERVICE: (ERAGADDHA) CALL: 7331168888, (MIYAPUR) CALL: 7331168888. ADARSHA: (ATTAPUR) CALL: 8897973366, (KARIMNAGHAT) CALL: 8297576633. KALYANI MOTORS: (NACHARAM) CALL: 9100102157, (LB NAGAR) CALL: 9100102157. GEM MOTORS: (KONDAPUR) CALL: 9272506060. E-OUTLETS: SAI SERVICE: (SANGAREDDY) CALL: 7331168888. ADARSHA: (SIDDIPET) CALL: 9581656633. VARUN: (MEDAK) CALL: 9703656111. AUTOFIN: (MEDCHAL) CALL: 8885040034. PAVAN: (IBRAHIMPATNAM) CALL: 7093711199.

*Terms and conditions apply. Creative Visualization. Black Glass on the vehicle is due to lighting effect. Features and accessories shown may not be part of standard fitment. Images used are for illustration purposes only. **Fuel efficiency as certified by test agency under Rule 115 of CMVR 1989. For details on functioning of safety features, including air bag, kindly refer to the Owner's Manual. All Loans & schemes are under the sole discretion of the Finance Partner.

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone: 27644999, Fax: 27642512, RNI No. 69340/98, Regd.: No. AP/HIN/00196/01/197/TC.

